© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Education

मिथिला कविताक रचना प्रक्रिया

डॉ० राजेश मिश्र
ग्राम–भट्टपुरा, पोस्ट–सरिसब पाही दरभंगा

सारांश – कविक कार्य काव्यथिक। काव्यक एक विद्या थिक तैँ काव्यक स्वरूप पर हम प्रकाश देल अछि। आब हमरा देखवाक अछि जे कविताक रचना प्रक्रिया की अछि?
कविता रचनाक प्रक्रियाक पूर्व हम काव्यक स्थित पर विचार करबा। कविता काव्यक विधा थिक ने काव्यक रचना प्रक्रिया सँ कविताक रचना प्रक्रिया बहुत किछु अपने स्पष्ट भए जायत।
काव्यक अभिव्यक्ति भाषा में होइत अछि तँ भाषा पर सेहो। किछु विचार करब आवश्यक बूझि पड़ैत अछि।

भाषा :–

हमरा कोनो ज्ञान लिखित रूप में होइत अछि तँ कहैत छी ई लिखित भाषा पूर्व अलिखित भाषाक स्वरूप स्वतः स्पष्ट भए जाइत अछि।
आब प्रश्न उठैत अछि जे भाषा की थिक?
'भाष् व्यक्तायां वाचि'[1] जकर अर्थ अछि व्यक्त वाणी। ई अर्थ भाष धातुक निष्पन्न थिक।
व्यक्तिवाणीक अर्थ अछि स्पष्ट आओर पूर्ण अभिव्यंजना जे उच्चारित वा वाचिक भाषाए सँ संभव अछि जाहि में सूक्ष्म सँ सूक्ष्म अर्थक बोध ध्वनि संकेत सँ होइत अछि। भाषाक स्वरूप निश्चित ध्वनिक संकेतक सहायता सँ भाव वा विचारक अभिव्यंजना मानल गेल अछि। आचार्य दंडीक कहब छनि यदि सृष्टिक आरंभ सँ भाषा (शब्द) क ज्योति नहि जरिते तँ ई त्रिभूवन घोर अंधकार में निमग्न भए जइते।[2]
वाणी दू अनिवार्य वस्तु अछि। 1. बोध, 2. अभिव्यंजन। बोध आदानक साधन थिक आ अभिव्यंजन प्रदानक। वाणीक उत्पन्नक मूलाधार थिक आत्मा, बुद्धि, मन ओ वायु।

भाषाक संप्रेषण साधन अछि। सामान्य अर्थ में द सोसूर भाषाक हेतु लागज शब्दक प्रयोग कएल जकर अर्थ अछि अभिव्यंजनाक सामान्य माध्यम अर्थात मनुष्य मात्र क भाषा। अतः कहि सकैत छी भाषा मनुष्य मात्रक भाव वा विचारक संयोजन वाणी थिक।

भाषाक मूल अव्यव ध्वनि, पद, वाक्य ओ अर्थ थिक। ध्वनि विविध रूप में होइत अछि जेना चुड़ीक झनझनायब, घंटीक टन टनायब, मच्छरक भन–भनायब। भाषाक ध्वनि हेतु आवश्यक छैक ध्वनिक निश्चितता। निश्चित ध्वनिक सार्थकता पद बनला पर होइत अछि। पद ध्वनिक मेल थिक जेना जल, कमल, चंचल। पदक प्रयोग वाक्य थिक।[3] अर्थक विषय में कहल गेल अछि

''यकस्मस्तुच्चरिते शब्दे यदायोडर्थ प्रतीयते तमाहुरर्थ तस्यैव नान्य दर्थस्य लक्षणाम।। जाहि शब्दक उच्चाररण सँ जे जाहि[4] अर्थक प्रतीत होइत अछि ओएह ओकर अर्थ थिक।

कोनो वस्तुक ज्ञान शब्द सँ होइत अछि तँ शब्दक अर्थ बोध आठ पकार सँ कएल गेल व्यवहार, आप्त वाक्य, उपनाम, वाक्य शेष, निवुति, प्रसिद्ध पदक सान्निध्य, व्याकरण कोष।[5]

शब्दक निर्माण ध्वनि करतै अछि तँ ध्वनि ओ अर्थक संसर्ग स्थापना मानव भाषाक चरम उपलब्धि थिक। ध्वनि तँ अन्य प्राणी जका मनुष्यहु कँ छलैक किन्तु ओकर अर्थ निश्चितता कोना भेल कतर विषय में अखन तक प्रश्ने बनल अछि।

भाषा स्व अर्जित वस्तु नहि थिक। ओ मानव प्रयत्नक विकासक परिणाम थिक। शब्द अर्थ संयोजन सँ स्थिर भाषाक स्वरूप लेल लिपिक आविष्कार भेल आ ओएह लिखित भाषा कहौलक। मनुष्य जीवनक समस्त चिंतन धारा जे लिखित भाषा में प्राप्त होइत अछि सएह हमर ज्ञानक क्षेत्रक मूलाधार थिक जकर पाँखि पर चढ़ि हम संसारक विविध स्वरूपक परिचय पाबि अपन चेतनाक क्षतिज बिस्तार नव दृष्टि सँ कए सहजानुभूति सँ आनन्दित होइत छी। मनुष्यक भाषाक प्रवाह अविच्छिन्न होइत छैक। युग–युग सँ एक दोसर पीढ़ी सँ ग्रहण करैत भाषा आइ तक जे सामने आयल अछि सएह काहिल्यो आगू बढ़त। भाषाक ई गतिशीलता समाज मे रहैत छैक। व्यक्ति ओकरा अर्जित तँ कए सकैत अछि, थोड़े परिवर्तनो कए सकैत अछि किन्तु ने तँ ओकरा उत्पन्न कए सकैत अछि आ ने समाप्त कए सकैत अछि। ओ ओहि विशाल काल जयी प्रवाहक एक नगण्य विन्दु मात्र अछि जे चाहियो कँ अपन सत्व पृथक नहि कए सकैत अछि।

मनुष्य के समस्त कार्य कलाप भाषा सं व्याप्त आओर परिचालित अछि। व्यक्ति– व्यक्तिक संबंध आ व्यक्ति समाजक संबंध भाषक विना अकल्पनीय अछि। मर्तृहरिक कळान सत्य अछि ''इति कर्तव्यता लोके सर्वाशब्द व्यापाश्रया।'' लोकक कर्तव्यक बोध अर्थात् की करबाक चाही तकर ज्ञान भाषाए पर आश्रित अछि। संसार में कोनो एहन प्रत्यय नहि छैक जे भाषा बिना संभव अछि। समस्त ज्ञान भाषा सँ अनुस्यूत सन देखना जाइत अछि। कहबोक तात्पर्य अछि जे मनुष्यक

आंतरिक आओर बाह्य व्यक्तिक ओ सामाजिक, चिंतन ओ अभिव्यंजन सभक सभ भाषाक परिणाम थिक।

भाषाक विभाजनः–

भाषा जखन समस्त ज्ञानक अक्षय स्रोत अछि तखन एकर विभाजन एहि रूप मे भए सकैत अछि।

1. विचार मूलक भाषा 2. भाव मूलक भाषा।

आत्मानं रचितं विद्धि शरीरं रथमेवतुः।

बुद्धिंतु सारथि सिद्धि मनः प्रग्रहमेवच।।[6]

विचार मूलक भाषा में वेद, पराण, विज्ञान, दर्शन, इतिहास, शास्त्र आदि अओत आ भावमूलक भाषा में समस्त काव्य चेतना जे युग–युग सँ अविच्छिन्न रूप में मानवक हृदय सँ वाणीक रूप में मन्दाकिनी जकाँ अह्लादित करैत प्रवाहित होइत आयल अछि। विचार मूलक ज्ञान मस्तिष्क आधारित होइत अछि आ भाव मूलक ज्ञान हृदय आधारित।

समस्त काव्य चेतनाक वाड्गमय हमर विलक्षण आनन्दक स्रोत रहल अछि।[7]

काव्यभेदः–

भाषाक भेद मुख्य रूप सँ अछि वैचारिक भाषा ओ काव्यात्मक भाषा जकरा रीति कहल जाइत छलजे आइ शैली रूप में जानल जाइत अछि।

काव्यक रीति 'रीड़' धातु सँ निष्पन्न भेल अछि जकर अर्थ होइत छैक गमन।[8]

भावक गमन शब्दक द्वारा उपास्थापना रीति थिक तँ काव्यात्म भाषाक नामे जानल जाइत अछि।

काव्य कवित व्यापार थिक जकरा वक्रोक्ति कहल गेल अछि।[9] काव्यक व्यापार गद्य आ पद्य दुनू से होइत अछि। एकर मुख्य तीन भ्सेद होइत अछि। 1. दृष्य काव्य, 2. श्रव्य काव्य ओ 3. चम्पू काव्य।

श्रव्य काव्य दू भेद अछि

1. छन्दहीन रचना गद्व ओ 2. छनद वद्ध रचना पद्य।

गद्य काव्यक सौटी मानल गेल अछि तँ कहलो गेल अछि गद्यं कवीनां निकषा वदन्ति। एकर मुख्य भेद अछि उपन्यास, कथा, निबंध। छनद बद्ध रचना पद्य होइत अछि। आचार्य दंडी अभिप्सित वा मनोरम अर्थ सँ विभूषत पद समूह कँ काव्य शरीरक साँ देने छथि।[10]

पद्य काव्यक मुख्यतया दू भेद अछि 1. निबद्ध जाहि अंतर्गत प्रबंध काव्य, महाकाव्य, खंड काव्य, पद कथाकाव्य अवैत अछि। 2. अनिबद्ध अर्थात् तुक्तक काव्य अछि। निर्बन्ध काव्य ओकाव्य थिक जकर अंतर्गत रचना में विभिन्न छनद मे कोनो प्रकारक विचार वा कथाक धारा वाश्रृंखला नहि

पाओल जायत अछि। एकर प्रत्येक छनद स्वतः पूर्ण आ निरपेक्ष रहैत अछि।[11] एहन काव्य कँ सामान्यतया मुक्तक नाम सँ जानल जायत अछि। ई पूर्ण चमत्कारिक होइत अछि।

सम्पूर्ण मुक्तक काव्य कँ हम तीन रूप में विभाजित कए सकैत छी। 1. भावना विचार परक अवसर युक्त पद, 2. गीति, 3 कविता।

भाव विचार पद दू–चारि पंक्तिक सतत काव्यक स्रोत बनल रहैत अछि जकर उपयोग लोक समय समय पर करैत रहैत अछि।

गेति 'गेय– धर्मयुक्त अछि जे गओला क बादे काव्यानुभूति देत अछि ओ श्रोता सुनि झूमि जाइल अछि।

क्ति लयात्मक होइल अछि जे पढ़लो पर काव्यानन्द दैत अछि। आब कविता गायक सीमा में प्रवेश कबने जाइत अछि तँ पढ़लेटा पर आनंद देत।

टाकारक दृष्टिये मुक्तक काव्यक सभ सँ छोट रूप अछि, अवसर युक्त पद सभ जकर उदाहरण अछि श्लोक, वचन दोहा, सूक्ति आदि। मैथिली में डाकक वचन बड़ प्रचलित अछि।

गीति काव्यक रूप में आकारक छोट संग भावानुभूति गेय धर्मिता रहने हृदयक प्रत्येक तार के तीव्रता सँ झनझना दैत अछि तखनहि अपन पूर्ण प्रभाव छोड़ि जाइत अछि। हमर समस्त प्राचीन काव्य गीति काव्यक उत्कर्षक विशेष परिचय अछि।

क्विताक आकार एहि दुनू सँ बहुत वेशी छैक। कोनो–कोनो कविता छोट आकारक पहिलुका गाओल सेहो जाइत छल। किन्तु आब मात्र पढ़ले पर आनन्दक परिचय दए सकैत अछि।

अस्तु, कविता सम्पूर्ण काव्यक एक भेद थिक जे अपन स्वतंत्र सत्ता रखैत अछि।

कविताक युगः–

एहि युग कँ हम मैथिली कविताक युग मानैत छी। कविता एही युग में जन्म लए सभ तरहें श्री संपन भए गेल अछि।

एहि से पूर्व काव्यक युग छल। गीति काव्य प्राचीन काव्यक अंग रहल अछितँ ओहि युग के हम गीतिकाव्यक युग कहैत छी।

आधुनिक काल मे गीत जाहि विशिष्टता संग अपन साम्राज्य स्थापित कएने छल से क्रमशः क्षिण होइत गेल। एकर मुख्य कारण अछि युग चेतना जकर संवहन करबा म गीतिकाव्य अक्षम होइत गेल।

कविता गीतिकाव्य सँ फराक भेने ओकर स्वतंत्र सत्ता क्रमशः एतेक वलवती होइत गेल जे समस्त काव्य मे ओ अपन विशिष्ट स्थान बना लेलक। एहि हेतु ई युग के कविताक युग कहैत छीं।

कविता में समस्त काव्यक विशिष्ट गुणक समावेश अछि संगहि युग अनुकूल भाव ओ विचारक तीव्र अनुभूति संग नव चेतना कखनहु कतहु अंकित कए सकैत छी।

आइ कविता जीवनक सभ क्षेत्र मे वास्तविक दर्शन करा रहल अछि संगहि प्रेरित कए जीवन दिशा कँ सुस्थिर कए परिणामक बोध करा जाइत अछि। एहि हेतु कहलो गेल छैक

''विरोधः सकलोडप्येष कदाचित कवि कौशलात्।

उत्क्रभ्य दोष गणानां गुणावीथी विगाहते।।''[13]

संदर्भ सूची :–

1. काव्यादर्श 3/168
2. नरत्वं दुर्लभ लोके विद्या तव सदुर्लभा।
   कवित्वं दुर्लभं तत्र, शक्तिस्तत्र सदुर्लभ।।– अग्निपुराण
3. मानव मन, प्यस्विनी, सुमन सा० सौ० द्वि० भा०–42
4. काव्यालंकार
5. काव्यादर्श
6. वक्रोक्ति जीवित
7. कवित्व बींज प्रतिभानम।
8. काव्यालंकार सूत्रवृति
9. वक्रोक्ति जीवित, 1/98
10. शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिना पदावली. काव्यदर्श 1/10
11. अनिबद्धं मुक्तादिः ।।20।। काव्यानुशासन
12. ''मुक्तः श्लोकएवैकश्चमत्कार क्षयः सताम्''
13. काव्यादर्श 3/169

♦♦♦♦♦